पाठ 4

पेड़ों के संग बढ़ना सीखो

(इस कविता के माध्यम से कवि ने पर्यावरण संरक्षण की प्रेरणा दी है।)

बहुत दिनों से सोच रहा था, थोड़ी-सी धरती पाऊँ

उस धरती में बाग-बगीचा, जो हो सके लगाऊँ,
खिलें फूल-फल, चिड़ियाँ बोलें, प्यारी खुशबू डोले
ताज़ी हवा जलाशय में अपना हर अंग भिगो ले।
हो सकता है पास तुम्हारे, अपनी कुछ धरती हो
फूल-फल लदे अपने उपवन हों, अपनी परती हो,
हो सकता है छोटी-सी क्यारी हो, महक रही हो
छोटी-सी खेती हो, जो फ़सलों से दहक रही हो।
हो सकता है कहीं शांत चैपाए घूम रहे हों
हो सकता है कहीं सहन में पक्षी झूम रहे हांे,
तो विनती है यही, कभी मत उस दुनिया को खोना
पेड़ों को मत कटने देना, मत चिड़ियों को रोना।
एक-एक पत्ती पर हम सबके सपने सोते हैं
शाखें कटने पर वे भोले शिशुओं-सा रोते हैं,
पेड़ों के संग बढ़ना सीखो, पेड़ांे के संग हिलना
पेड़ों के संग-संग इतराना, पेड़ो के संग हिलना।

बच्चे और पेड़ दुनिया को हरा-भरा रखते हैं
नहीं समझते जो, वे दुष्कर्मों का फल चखते हैं,
आज सभ्यता वहशी बन, पेड़ांे को काट रही है
ज़हर फेफड़ों में भर, इंसानो को बाँट रही है।

-सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का जन्म 15 सितम्बर सन् 1927 ई0 को बस्ती में हुआ था। ये नयी कविता के श्रेष्ठ कवियों में से एक हैं। इनके काव्य में प्रगतिशील चेतना की प्रधानता है। 'कुआनो नदी', 'गर्म हवाएँ' तथा 'खँूटियों पर टँगे लोग' 'कविताएँ-एक' तथा 'कविताएँ-दो' इनकी काव्य पुस्तकें हैं। 'काठ की घंटियाँ', 'बाँस का पुल', 'बिल्ली के बच्चे' इनके प्रमुख नाटक हैं। इन्होंने निबन्धों की भी रचना की है। इनका देहावसान 23 सितम्बर सन् 1983 ई0 को हुआ।

शब्दार्थ

दहक=आग की लपट। सहन= आँगन। जलाशय=तालाब। अंग=हिस्सा/भाग। दुष्कर्म=बुरे कर्म। वहशी=असभ्य, बर्बर।

प्रश्न अभ्यास

कुछ करने को

1. पेड़ में पानी डालते हुए माली का चित्र बनाइए और रंग भरिए।

2. नीचे लिखे गये शब्दों की सहायता से आप भी एक तुकान्त कविता बनाइए-

खोना, रोना, काट, बाँट, हरा, भरा

3. अपने विद्यालय/घर में एक पेड़ लगाइए और उसकी देखभाल नियमित कीजिए।

विचार और कल्पना

1. अगर पेड़ न हांेगे तो मनुष्य का जीवन कैसा हो जायेगा? इस संबंध में अपने विचार

व्यक्त कीजिए।

2. यदि पेड़ पौधे बोलने लगें तो वे अपनी कौन-कौन सी समस्या बतायेंगे ?

कविता से

1. ‘‘बहुत दिनों से सोच रहा था, थोड़ी-सी धरती पाऊँ’’ से कवि का क्या आशय है ?

2. कविता में कवि की क्या चिन्ता है ?

3. कवि क्या विनती कर रहा है ?

4. बच्चे और पेड़ संसार को हरा-भरा किस प्रकार रखते हैं ?

भाषा की बात

1. क्रिया के जिस रूप से ज्ञात होता है कि कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी दूसरे को कार्य करने के लिए पे्ररित कर रहा है, उसे ‘प्रेरणार्थक क्रिया‘ कहते हैं, जैसे-पढ़ना-पढ़वाना।

निम्नलिखित क्रिया शब्दांे से पे्ररणार्थक क्रिया बनाइए-
खेलना, रखना, घूमना, काटना, बनाना, लिखना, देखना, पिलाना।
2. जहाँ पर वर्णों की आवृत्ति से काव्य की शोभा बढ़ती हो वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है। उदाहरण के लिए-संग-संग, एक-एक, बाग-बगीचा, फूल-फल आदि। आप अपनी पुस्तक से खोजकर अनुप्रास अलंकार के दो अन्य उदाहरण लिखिए।